

17-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - मैं तुम बच्चों के लिए हथेली पर बहिश्त लाया हूँ, तुम मुझे याद करो तो स्वर्ग की बादशाही मिल जायेगी"



कापारी खुशी





प्रश्नः- बेहद की खुशी किन बच्चों को निरन्तर रह सकती है?



उत्तरः- 1 जिन्होंने बेहद का संन्यास किया है और संग तोड़ एक संग जोड़ा है, वही निरन्तर खुशी में रह सकते हैं। 2- जो फालो फादर करते हैं, जिन्हें सर्विस का शौक है उनकी खुशी कभी गायब हो नहीं सकती।



गीतः- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन.... Click



छोड़ भी दे आकाश सिंघासन
फिर धरती पर आ जा रे
छोड़ भी दे आकाश सिंघासन
फिर धरती पर आ जा रे
फिर धरती पर आ जा रे
फिर धरती पर आ जा रे
फिर धरती पर आ जा रे

जब जब विपद पड़ी जग माई
तू ही बना रखवाला सांई
पाप कपट की फ़ैल रही है
पाप कपट की फ़ैल रही है
इस जग में फिर से परछाई
गीता का उपदेश सुनाने
रूप बदल कर आजा रे
रूप बदल कर आजा रे
रूप बदल कर आजा रे

छोड़ भी दे आकाश सिंघासन
फिर धरती पर आ जा रे
फिर धरती पर आ जा रे
रूप बदल कर आजा रे
आजा रे आजा रे
आजा रे आजा रे
आजा रे आजा रे
आजा रे आजा रे

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्
॥

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

जब जब विपद पड़ी जग माई

तू ही बना रखवाला सांई













ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत सुना। यह किसने कहा? बाप ने बच्चों को कहा कि गीत सुना? जब अति दु:ख होता है तब बुलाते हैं। बच्चे जानते हैं कि बाप ही (only) सुखधाम वा पावन दुनिया रचते हैं अथवा भगवान भगवती का राज्य स्थापन करते हैं। भगवान और भगवती जैसे स्वर्ग के मालिक ठहरे। तुम देखते हो लक्ष्मी-नारायण कितने धनवान थे, कितनी बड़ी राजधानी थी। उनकी राजधानी में कभी कोई उपद्रव होता नहीं। बाप बच्चों को वर्सा ही ऐसा देते हैं तो कितनी खुशी में रहना चाहिए। परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो हैं ही। कोई-कोई तो पूरा ज्ञान न उठाने के कारण न वहाँ की खुशी में रहते हैं और न यहाँ की खुशी में रहते हैं। उनको कहते हैं दोनों जहाँ से गये क्योंकि बाप से वर्सा लेते-लेते गिर पड़ते हैं। **दुनिया में यह किसको मालूम नहीं कि** भगवान आकर स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं क्योंकि वह आते ही हैं गुप्त रूप में। कहते हैं जरूर भगवान इस समय होना चाहिए क्योंकि सब घोर अन्धियारे में हैं। रात को 12 बजते हैं तो उनको घोर अन्धियारा कहा जाता है। रात में घोर अन्धियारा, दिन में घोर प्रकाश होता है। बच्चे जानते हैं अब भक्ति मार्ग की

But we know, How Lucky & Great we are..!



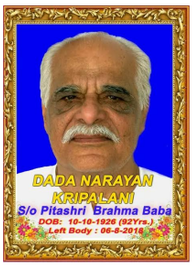






मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३॥





रात पूरी होती है, जिसमें दुःख ही दुःख है। मनुष्य समझते हैं भक्ति के बाद भगवान मिलता है। तुम जानते हो बाप ही आकर हम सबकी सद्गति करते हैं। तुम बच्चों में भी नम्बरवार तो जरूर हैं। कोई का तो खुशी का पारा चढ़ा हुआ रहता है। मेहनत भी खुशी से करते हैं। सर्विस का शौक रहता है कि कोई को जाकर समझायें, इसलिए बाबा प्रदर्शनी, मेले का भी प्रबन्ध रचते रहते हैं कि औरों को समझाने से खुशी का पारा चढ़ जाये। यहाँ जिसके पास धन है, वह समझते हैं हम स्वर्ग में बैठे हैं। उन्हों के लिए ज्ञान उठाना मुश्किल है इसलिए गाया हुआ है कोटों में कोई ही इतना समझदार बन बाप के वर्से के अधिकारी बनते हैं। फालो फादर गाया हुआ है। तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। जो अच्छी तरह से श्रीमत पर चलते हैं उनको फॉलो फादर करना चाहिए। जैसे यह (ब्रह्मा) बच्चा अच्छी तरह चल रहा है। लौकिक बच्चे राय पर नहीं चले तो कहा तुम अपनी राह ले लो। रावण की मत पर चलने वाले और राम की मत पर चलने वाले इकट्ठा नहीं रह सकते।



84 जन्मों की सीढ़ी: सतो से तमो, स्वर्गवासी से नर्कवासी बनने का क्रम।

तुम बच्चे समझते हो कि भारत में ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। वह 84 जन्म ले पतित बने हैं, तब पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ। अभी तुम बच्चे समझते हो कि बाकी थोड़े रोज़ हैं। दैवी राजधानी स्थापन करने में टाइम तो लगता है। यह है गुप्त। इसमें लड़ाई की बात नहीं। ऐसे नहीं चढ़ाई करके राज्य लेते हैं। नहीं, यह तो बाप आकर राजाओं का राजा बनाते हैं। जिस बाप को याद करते दु:ख-हर्ता सुख-कर्ता आओ। संन्यासी गुरू थोड़ेही दु:ख-हर्ता हो सकते हैं? उन्हों का संन्यास है हद का। तुम्हारा है बेहद का। इसमें बेहद की खुशी रहती है। इन लक्ष्मी-नारायण भगवती-भगवान को भी बेहद की खुशी है ना। पतित मनुष्यों को तो जो आता सो बोलते हैं। तुम तो एक-एक अक्षर अर्थ सहित बोलते हो। नई दुनिया में है ही एक धर्म। उनकी कोई से भी भेंट नहीं की जाती है। पुरानी दुनिया में भेंट की जाती है। नई दुनिया में यह पता नहीं रहता कि पुरानी दुनिया में क्या होगा। वहाँ सब कुछ भूल जाता है। यहाँ तुमको सब कुछ बतलाया





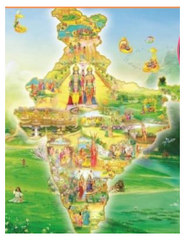


जाता है कि नई दुनिया कब स्थापन होगी! पुरानी दुनिया कब विनाश होगी! तुमको सब नॉलेज है। अब तुमको बाप मिला है स्वर्ग की स्थापना करने वाला। तो उनसे अच्छी तरह से वर्सा लेना चाहिए। वर्सा मिलना भी उन्हों को है जिन्होंने कल्प पहले अच्छी तरह पुरुषार्थ किया था। उनमें भी नम्बरवार हैं। यह है काँटों की दुनिया। पहले नम्बर का कांटा तो सबमें है ही। पुरानी दुनिया छी-छी, नई दुनिया अच्छी होती है। स्वर्ग किसको कहा जाता है, यह भी किसको पता नहीं है। ऐसे ही कह देते हैं कि फलाना स्वर्गवासी हुआ। स्वर्ग है कहाँ जो स्वर्गवासी हुआ।

सोचो तुमको कौन मिला है,
कौन तुम्हारा साथी है।
सारे संसार का सार हमें मिल गया है।
हम सा खुशनसीब न कोई था, न कोई है,
न कोई होगा।



चढ़ाओ नशा...





तुम जानते हो स्वर्ग भी इस भारत में था। नर्क भी भारत में है। तो यह अक्षर वो लोग पकड़कर कह देते हैं स्वर्ग नर्क यहाँ ही है। जिनको बहुत धन है वह स्वर्ग में हैं। परन्तु Actually ऐसे नहीं है। भारत नया था तो सतयुग था, जिसको स्वर्ग कहा जाता है। अभी पतित दुनिया नर्क है। दुनिया तो एक ही है। नई दुनिया में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। पुरानी



दुनिया में रावण का राज्य है। भगवानुवाच, मैं तुमको 84 जन्मों का राज़ बताता हूँ। इस राजयोग से तुमको राजाओं का राजा स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। तो As Certain as Death नर्क का जरूर विनाश होना ही चाहिए। शास्त्रों में श्रीकृष्ण का नाम डाल लड़ाई आदि दिखा दी है। पाण्डवों की कोई सेना तो है नहीं। आजकल कन्याओं, माताओं की पलटन बनाए उन्हों को बन्दूक आदि चलाना सिखाते हैं। यहाँ तुम्हारे हाथ में बन्दूक आदि कुछ नहीं है। उनको क्या मालूम तो शिव शक्ति सेना कौन है? शिवबाबा तो कभी हिंसा करा नहीं सकते। लड़ाई की कोई बात ही नहीं। तुम जानते हो कि शिवबाबा की रूहानी सेना है। शिवबाबा हमको डबल अहिंसक बनाते हैं। उनको कहा जाता है 100 परसेन्ट नॉन-वायोलेन्स। यहाँ है 100 परसेन्ट वायोलेन्स (हिंसा)। एक ही बॉम्ब्स से कितनों का विनाश कर देते हैं। बेहद के नान-वायोलेन्स और वायोलेन्स में कितना फ़र्क है। तुम अभी इस समय बेहद की साइलेन्स में हो। उस तरफ जितना लड़ाई की तैयारियाँ होती जाती हैं, उतना आवाज बढ़ता जाता है। कितना हंगामा होता है विनाश में। स्थापना में तो कितनी साइलेन्स में बैठे













तुमसा हसीन बाबा कोई नहीं जहान में,
तुमने हसीन बनाया हमको भी इस जहान में..





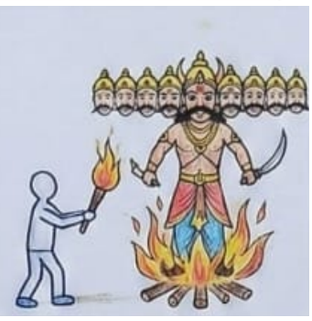


हो। हिंसा की कोई बात ही नहीं। तुम्हारी अब प्रैक्टिकल लाइफ है। बाप से योग बल द्वारा वर्सा पा रहे हो। बाप अल्फ को याद करने से स्वर्ग की बादशाही मिलती है, कितना सहज है। बाप कितना मोस्ट बील्वेड है। कितना दूरदेश से आते हैं। जैसे विलायत से किसका बाप आता है तो बच्चे बहुत खुश होते हैं। बाबा हमारे लिए विलायत से अच्छी-अच्छी सौगात लायेंगे। यह बेहद का बाप तो एक ही बार आता है। कौन सी सौगात ले आते हैं? कहते हैं **मैं तुम्हारे लिए हथेली पर बहिश्त ले आया हूँ।** जैसे कहते हैं हनुमान संजीवनी बूटी का पहाड़ ले आया। अब पहाड़ तो कोई उठा नहीं सकता है। वैसे ही बाप कहते हैं "मैं हथेली पर बहिश्त ले आया हूँ।" अब बहिश्त कोई हथेली पर थोडेही उठता है। यह तो समझ की बात है। बच्चे तो जानते हैं बाबा हमारे लिए नम्बरवन सौगात लाये हैं। बाप कहते हैं - मैं आया हूँ तुमको पावन दुनिया का मालिक बनाने तो पावन बनना पड़े। यह राजयोग है ना। भारत का प्राचीन राजयोग गीता के भगवान ने ही सिखलाया था और राजाई दी थी। अब फिर से राजयोग सिखला रहे हैं। तुम कहते हो कि हम स्वर्ग की

स्थापना करने वाले बाप के बच्चे हैं, बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं तो जरूर किसी को तो बादशाही मिली होगी ना। ऐसे भी नहीं सिर्फ स्वर्ग में रहने वालों को ही बाप ने दिया होगा। और सबको भी तो बाप देते हैं ना। बाकी सबको ड्रामा अनुसार मुक्ति का पार्ट मिला हुआ है। सब मुक्त हो जाते हैं। एक ही बाप सर्व का सद्गति दाता है, दूसरा न कोई। तुम्हारे पास प्रदर्शनी में जो नामीग्रामी आते हैं, जो मानते हैं कि बरोबर गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं है, शिव है, तो उनसे लिखवा लेना है। बड़े आदमियों की ही बात को सुनेंगे। गरीब की तो कोई सुनते नहीं इसलिए प्रदर्शनी में कोशिश कर यह लिखवा लो **गीता का भगवान एक ही है**। वह सबका बाप है। आज से 5 हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था, लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। अभी तो सारे विश्व पर रावण का राज्य है, यही सबका दुश्मन है, जिसको वर्ष-वर्ष जलाते हैं। फिर भी मरता नहीं है। अभी भारत का बड़ा दुश्मन यह रावण है, यह बात सिर्फ तुम जानते हो। अब राम परमपिता परमात्मा रावण पर जीत पहनाते हैं। कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप नाश होंगे, तुम लायक बन जायेंगे तो फिर नई दुनिया

What does it means...?
Point to ponder deeply...
Refer last pages







चाहिए। जरूर पुरानी दुनिया का विनाश भी हुआ था, सो होगा। महाभारत लड़ाई लगी ही तब है जब रावण राज्य विनाश हो रामराज्य स्थापन होता है। रावण राज्य में ही हाहाकार शुरू होता है। हाहाकार के बाद जयजयकार होती है, दुनिया बदलती है। जैसे पुराना घर तोड़ नया बनाया जाता है फिर तोड़ा जाता है, यह भी स्थापना हो रही है। बॉम्ब्स आदि बनाते ही रहते हैं। तैयारियां हो रही हैं। अभी दशहरा आया तो रावण की एफीजी भी निकाली। तुम्हारी है बेहद की बात। तुम्हारी बुद्धि में आता है यह क्या करते हैं। तुम जब समझायेंगे तब समझेंगे हम यह क्या करते हैं। हँसी भी आयेगी। किसको भी समझा सकते हो - इतना बड़ा रावण तो होता ही नहीं। अब बाप कहते हैं तुम रामराज्य लो। **5 विकारों का दान दो ग्रहण छूट जाए**। बाप आकर समझाते हैं यह 5 विकारों का ग्रहण सारी दुनिया पर लगा हुआ है। बिल्कुल ही काले हो जाते हैं। तुम बच्चों को तो अथाह खुशी होनी चाहिए। बाकी थोड़े रोज़ हैं।











तुम अभी क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर्स ड्रामा के आदि मध्य अन्त को जानते हो, और कोई नहीं जानते। तुम्हारी अब स्वच्छ बुद्धि बनी है। तुम बाप के बने हो तो जरूर स्वर्ग में भेज देंगे। नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इनकम कहा जाता है। यह है रूहानी नॉलेज, जो बाप ही देते हैं। मनुष्य, मनुष्य को दे नहीं सकते। दुनिया में सब मनुष्य, मनुष्यों को नॉलेज देते हैं। चढ़ाओ नशा... तुमको तो बाप सुप्रीम सोल आकर ज्ञान देते हैं। बाकी सब हैं भक्ति मार्ग की दन्त कथा सुनाने वाले। सत्य नारायण की कथा, रामायण की कथा.... जो पास्ट हो गया है वह कुछ न कुछ बनाते रहते हैं। यह तो है पढ़ाई। पढ़ाई में हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाई जाती है। यह है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी, ह्यूज़(Huge)। तुम समझाते हो बाबा ने 5 हजार वर्ष पहले भी कहा था वह गीता पढ़ने वाले थोड़ेही कुछ समझते हैं। यादव, कौरव, पाण्डव किसको कहा जाता है तुम प्रैक्टिकल में देखते हो। यूरोपवासी यादवों ने missiles मूसल निकाले, विनाश हुआ। विनाश के बाद क्या हुआ, वह कुछ नहीं दिखाते हैं। वह समझते हैं प्रलय हो गई। वह कहते हैं तुम शास्त्रों को मानते हो? बोलो हाँ, हम



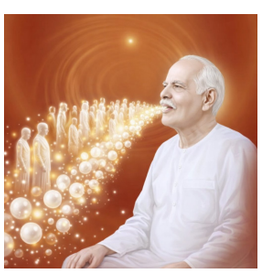






शास्त्रों को जानते हैं, मानते हैं यह सब भक्ति मार्ग के हैं। ज्ञान तो एक बाप ही सुनाते हैं, जो ज्ञान का सागर है। अब भक्ति खत्म हो ज्ञान जिंदाबाद हो रहा है। **पुरानी दुनिया का विनाश सामने खड़ा है,** नथिंग न्यू। हमारी प्रीत है बाप से। हम और संग तोड़ एक संग जोड़ते हैं। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ मेरे साथ योग लगाओ इसको ही भारत का प्राचीन योग कहा जाता है, जो बाप ही सिखलाते हैं। श्रीकृष्ण की आत्मा भी इस समय अन्तिम जन्म में है, इनको कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो।

श्रीभगवानुवाच Adhyay : 4
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप॥
श्रीभगवान् बोले—हे परंतप अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत-से जन्म हो चुके हैं। उन सबको तू नहीं जानता, किन्तु मैं जानता हूँ॥५॥



यह तुम्हारा बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है, इसलिए मैंने इसमें प्रवेश किया है। मैं इसमें बैठकर तुम बच्चों को ब्रह्मा मुख वंशावली बनाए राज्य-भाग्य देता हूँ। बाप के सिवाए और कोई बता न सके। Exclusive Authority of Shiv baba यह तो बाप खुद इस मुख द्वारा सुना रहे हैं। यह बाबा भी पहले कुछ नहीं जानते थे, तुम भी कुछ नहीं जानते थे। भारतवासियों को ही समझाना पड़े। 84 जन्मों का चक्र कैसे फिरता है, यह वही लड़ाई खड़ी है, जिससे स्वर्ग के गेट खुले थे। जबकि बाप ने आकर राजयोग सिखलाए मनुष्यों को देवता बनाया था।



17-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

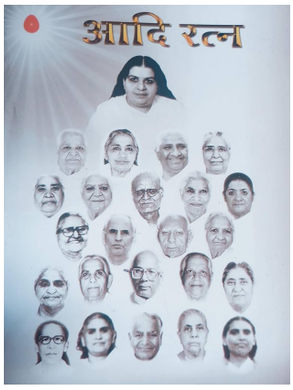
अच्छा!



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



धारणा के लिए मुख्य सारः-



1) जो अच्छी रीति श्रीमत पर चलते हैं, उन्हें फालो करना है। बेहद की खुशी में रहने के लिए आप समान बनाने की सेवा करनी है।





2) प्रीत बुद्धि बन और संग तोड़ एक बाप से जोड़ना है। डबल अहिंसक बन साइलेन्स में बैठ अपनी राजाई स्थापन करनी है।



Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

17-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

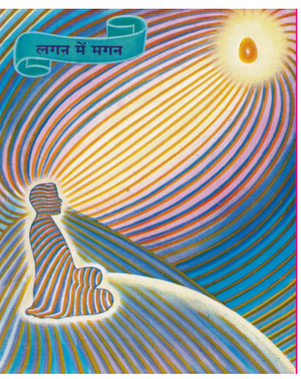
वरदानः- त्याग और तपस्या द्वारा सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले सच्चे सेवाधारी भव

Finale Achievement

सेवा में सफलता का मुख्य साधन है त्याग और तपस्या।

त्याग अर्थात् मन्सा संकल्प से भी त्याग, किसी परिस्थिति के कारण, मर्यादा के कारण, मजबूरी से त्याग करना यह त्याग नहीं है लेकिन ज्ञान स्वरूप से, संकल्प से भी त्यागी बनो और

Mind very well...



तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, ज्ञान, प्रेम, आनंद, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए।

ऐसे त्यागी, तपस्वी ही सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले सच्चे सेवाधारी हैं।



स्लोगनः- अपनी तपस्या द्वारा शान्ति के वायब्रेशन फैलाना ही विश्व सेवाधारी बनना है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



ये अव्यक्त इशारे -

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो



आप सम्पूर्ण आत्माओं का अन्तिम वाहन है कर्मबन्धन मुक्त, कर्मातीत स्थिति।



ऐसी स्थिति बनाने के लिए ब्रह्मा बाप समान सर्व हदों पर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न बनो, तब अन्तिम कर्मातीत स्वरूप के अनुभवी बनेंगे।

अनेक प्रकार की हदें अर्थात् अनेक मेरा मेरा।

जब मैं (1) और मेरा, तू (3) और तेरा (4) .. यह चार शब्द एक बाबा शब्द में समा जायेंगे तब सम्पूर्णता समीप आयेगी।



Points: Golden

If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

Mind Mapping is Available Here

All वरदान slogans Oct 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Oct 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

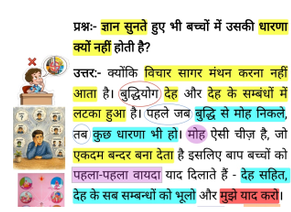
अगर आप को Mind Maps के रिलेटेड कोई Feedback या Suggestion भेजना है तो Click

मन मत

माया वास्तव में क्या है और कैसे माया को समझ सकते हैं व उसे जीत सकते हैं?

मीठे बाबा की श्रीमत है की "बच्चे विचार सागर मंथन करो"
SM:30/5/2026

Click



माया को अगर सबसे सरल रीति समझना है तो एक कंप्यूटर प्रोग्रामर जो कि कंप्यूटर की कोडिंग करता है जिसे हम software या Application भी कहते है
और उस कोडिंग को चलाने/Run करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी चाहिए तो इन तीनों से माया को ऊपर ऊपर से समझ सकते हैं

इस बेहद सृष्टि नाटक में सभी आत्माएं चैतन्य एक्टर्स है मीठे ब्रह्मा बाबा इस सारी सृष्टि का coding(नियम सूची) करने वाले वह प्रोग्रामर है इसी कारण से शास्त्रों में ब्रह्मा बाबा को श्रृष्टि के रचयिता या जगत पिता कहा गया है
साथ ही जो यह कोडिंग होती है उसको चलाने/रन करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी अर्थात ऊर्जा चाहिए वह मिलती है शिव बाबा से
और इसी कारण से शिव बाबा हमेशा ही ड्रामा के बाहर रहते हैं जो की ब्रह्मा बाबा के द्वारा किए हुए coding को निरंतर ऊर्जा प्रदान करते रहते हैं और इसीलिए भक्ति मार्ग में शास्त्रों में परमात्मा को सर्वव्यापी कहा है क्योंकि जैसे किसी सॉफ्टवेयर या प्रोग्रामिंग में इलेक्ट्रिसिटी निरन्तर फ्लो होगी तभी वह प्रोग्राम रन करेगा उसी प्रकार यह सारी सृष्टि जो है उसमें शिव बाबा की ऊर्जा प्रवाहित होती है तो इसी कारण से उन्होंने शिव बाबा को सर्वव्यापी कह दिया है
असूल में/एक्चुअल में शिव बाबा सर्वव्यापी नहीं है किंतु उनकी ऊर्जा सारी सृष्टि में व्याप्त/सर्व व्यापी है और निरंतर/constant है

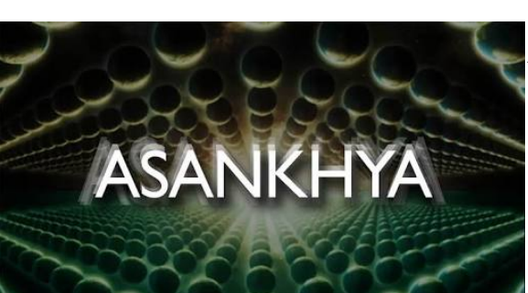


यह माया जो है वह अनंत है
इसको ऐसे समझो:-
1 के बाद 2 आएगा 3 आएगा 4 आएगा उसको आप आगे से आगे लिखते जाओ
लाख, 10 लाख, करोड़, 10 करोड़, अरब, 10 अरब और उससे भी आगे आपको जहां तक गिनती आती हो .....
आपको गिनती आना खत्म हो जाएगा लेकिन नंबर तो उससे भी आगे चलता ही जाएगा अर्थात हमें उस फिगर/अंकों का मूल्य क्या बोलना है वह नहीं मालूम होगा लेकिन वो मूल्य अपना अस्तित्व जरूर रखेगा और वह मूल्य आगे से आगे बढ़ता ही चला जाएगा अनंत तक/♾️ To the Infinity तो इस ही प्रकार से माया भी अनंत है

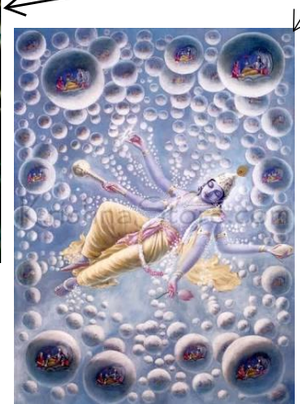
कोई भी माना कोई भी अपने आप से/अपने बल बूते पर इस माया को पार नहीं कर सकता वह फिर चाहे मीठे ब्रह्मा बाबा-The creator खुद ही क्यों ना हो ,
जिन्होंने खुद (शिव बाबा के मार्गदर्शन में) इस ड्रामा को रचा - वह खुद भी ड्रामा में श्री कृष्ण बन कर आने से लेकर 84 वे जन्म में जब तक स्वयं शिव बाबा ने उनके तन में प्रवेश नहीं किया तब तक माया को पार नहीं कर सकते

अब सोचो स्वयं ब्रह्मा बाबा(creator) भी शिव बाबा की श्रीमत के बिना उस अनंत माया को जीत नहीं सकते तो हम किस खेत की मूली है जो दूसरी अपूर्ण ब्राह्मण आत्माओं को फॉलो करके माया को जीत सकेंगे...?

और एक अति सूक्ष्म बात यह है की
जिस प्रकार कोई वस्तु महासागर के बीच में डूबी हुई होती है तो उसके चारों तरफ जैसे पानी उस वस्तु को घेरे हुए होता है उसी प्रकार माया हमारे चारों तरफ सर्वव्यापी है और हम आत्माएं अभी माया के राज्य में रहते हैं तो हमारे हर एक संकल्प भी हमें गिराने और चढ़ाने के निमित बनते हैं अर्थात सारा खेल संकल्पों पर है। Every Single Thought is in Account.
जो संकल्प बाप दादा की श्रीमद् के विपरीत किया तो वह भी आत्मा को गिराने के निमित्त बन जाता है, ऐसा नहीं सोचना है कि एक संकल्प ही तो किया है ना इसमें क्या हुआ, किंतु नहीं। हर एक संकल्प account में लिया जा रहा है और उसके परिणाम(अच्छा व बुरा)भी भोगने की हमे तैयारी रखनी पड़ेगी
और वाणी और कर्म जो है वह तो बहुत बहुत बहुत बड़ी बात हो जाती है जो अगर हमने श्रीमत के विपरीत ऐसा कोई कर्म कर लिया तो वह हमें कर्म बंधनों में ऐसा तो फंसा देते है की जिससे बाहर निकलना भी कई बार मुश्किल हो जाता है(और फिर ज्ञान से भी कई बार आउट हो जाते हैं जो फिर बाहर जाकर बाबा की और इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की बुराई करने में लग जाते हैं जिससे वो और ही नीचे गिर जाते है जिसको बाबा "रसातल में चले जाना" कहते है) इसलिए मीठे बाबा कहते हैं की "सभी सब्जेक्ट में फूल पास होना है तो गंभीरता के गुण को धारण करो(ममा के जैसे)" - गंभीरता हमारे लिए एक कवच का काम करती है, जिससे वाचा और कर्मणा में हम बच जाते है और फिर फोकस सिर्फ संकल्पों का रहता है।



17/11/26 आज की मुरली





एक्चुअल में जो मीठे बाबा ने बताये है वही तीन लोक है इससे ज्यादा कुछ नहीं
लेकिन आप इसको ऐसे समझे कि programmer के पास जो कंप्यूटर है वह अनलिमिटेड स्टोरेज वाला सुपर कंप्यूटर या quantum computer है तो उसमें असंख्य एप्लीकेशन या सॉफ्टवेयर ऐड करके रन करा सकते है (इसलिए मीठे अव्यक्त बापदादा कई बार कहते हैं कि बच्चे आप पुरुषार्थ तो करो बाबा आपके लिए माला में लड़ियां लगा देगा।क्यों कहते हैं ऐसा क्योंकि बाबा के पास unlimited शक्तियां है - वह जो चाहे वह कर सकते हैं)
ठीक वैसे ही इसे भक्ति मार्ग में यह असंख्य ब्रह्मांड(multi verse या कहो कि वर्चुअल वर्ल्ड) दिखाएं है(उदाहरण: आजकल face book वाले Meta Verse create कर रहे है जो virtual world है) वो multi verse और कुछ नहीं है वो सिर्फ मीठे ब्रह्मा बाबा के संकल्प की रचना है जिसमें जो मुक्ति में रहने वाली आत्माएं है उन हर एक के लिए पूरी की पूरी virtual/आभासी दुनिया बना दी है (Real/सच्चा खेल तो इस साकार श्रृष्टि पर ही खेला जाएगा)- आखिर भी ब्रह्मा बाबा है तो सारी सृष्टि के पिता - जगत पिता ही ना, चाहे कोई उन्हें पिता माने या ना माने लेकिन पिता हमेशा पिता ही होता है, जो बच्चों पर हमेशा रहम दिल होता है चाहे वह सपूत हो या कपूत। और इसीलिए शिव बाबा को भक्ति में अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक भी कहते हैं क्योंकि यह जो मल्टीवर्स है उस एक एक ब्रह्मांड में मुक्ति वाली एक एक आत्माएं रहती है और उन सब के मालिक है शिव बाबा।



भक्ति मार्ग में इसीलिए गाते भी है कि
"चाहे अमीर हो चाहे गरीब हो उनको एक समान, सबकी बिगड़ी वो ही बनाये हम सब के भगवान्, मेरे भोले के दरबार में सबका खाता है।"

तो मीठे बाबा सभी आत्माओं को जो Reward/सुख देता है वह 100% ही मिले वैसा करते हैं (वो सुप्रीम न्याय कर्ता जो है) - इसको हम अपनी अल्पज्ञ बुद्धि चलाने से कभी भी नहीं समझ सकते हैं
इसको अगर जानना है तो सबसे पहले अपनी अल्पज्ञ बुद्धि के द्वारा भगवान के सामने तर्क करने के, सारे दरवाजे जो है उसको बंद करने पड़ेंगे ।
मीठे बाप दादा जो बुद्धि वानो की बुद्धि है वह जो कहते हैं उसको ब्लाइंड्ली फॉलो करना पड़ेगा (भगवान के सामने एक संकल्प मात्र का भी तर्क नहीं। सदैव हाँ बाबा, हाजिर बाबा, अभी बाबा - बस इतना ही -That's All) जब उनकी दृष्टि से सारे ड्रामा को देखेंगे तो सहज सब कुछ देखने में आ जाएगा।

हाँ, इसमें इतना जरूर है कि जिन आत्माओं ने इस संगम युग पर भगवान की श्रीमत पर माया को बापदादा की मदद से अपने बलबूते पर जीता है वह चारों ही युगों में सर्वश्रेष्ठ पार्ट बजाएंगे।

Bible - Gospel of Matthew 20:16 की कहानी

यीशु मसीह ने एक दृष्टांत (parable) सुनाया जिसे “अंगूर के बाग के मजदूरों का दृष्टांत” कहा जाता है।

कहानी

एक ज़मीन का मालिक सुबह-सुबह अपने अंगूर के बाग में काम करने के लिए मजदूरों को बुलाने गया। उसने उनसे एक दिन की मजदूरी तय की।
फिर वह दिन में कई बार बाहर गया:
सुबह 9 बजे
दोपहर 12 बजे
3 बजे
और यहाँ तक कि शाम 5 बजे भी
हर बार उसने और मजदूरों को काम पर रखा और कहा कि उन्हें उचित मजदूरी दी जाएगी।

मजदूरी देने का समय
शाम को मालिक ने सबको मजदूरी देनी शुरू की।

आश्चर्य की बात यह थी कि:
जो मजदूर केवल एक घंटा काम किए थे, उन्हें भी पूरा दिन का पैसा मिला।
और जिन्होंने सुबह से पूरा दिन मेहनत की थी, उन्हें भी उतना ही मिला।
↑ That is by their efforts/मेहनत

यह देखकर पहले वाले मजदूर शिकायत करने लगे:
“हमने ज़्यादा मेहनत की, फिर भी हमें बराबर पैसा मिला!”

लेकिन मालिक ने कहा:
“मैंने तुम्हारे साथ अन्याय नहीं किया। मैंने वही दिया जो तय हुआ था। अगर मैं दूसरों पर दया और उदारता दिखाना चाहता हूँ, तो इसमें गलत क्या है?”

फिर यीशु ने कहा:
“इस प्रकार जो पीछे हैं वे पहले होंगे, और जो पहले हैं वे पीछे होंगे।” (“So the last will be first, and the first will be last.”)

इस कहानी का अर्थ
यीशु सिखाना चाहते थे कि:
परमेश्वर सब पर अपनी कृपा करता है।
परमेश्वर इंसानों की तरह ऊँच-नीच नहीं देखता।
घमंड और तुलना करना गलत है।
जो लोग दुनिया में छोटे या पीछे माने जाते हैं, परमेश्वर की नज़र में वे महान हो सकते हैं।

मुख्य शिक्षा
परमेश्वर का प्रेम और कृपा केवल मेहनत, पद या समय पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी दया और अनुग्रह पर आधारित होती है।

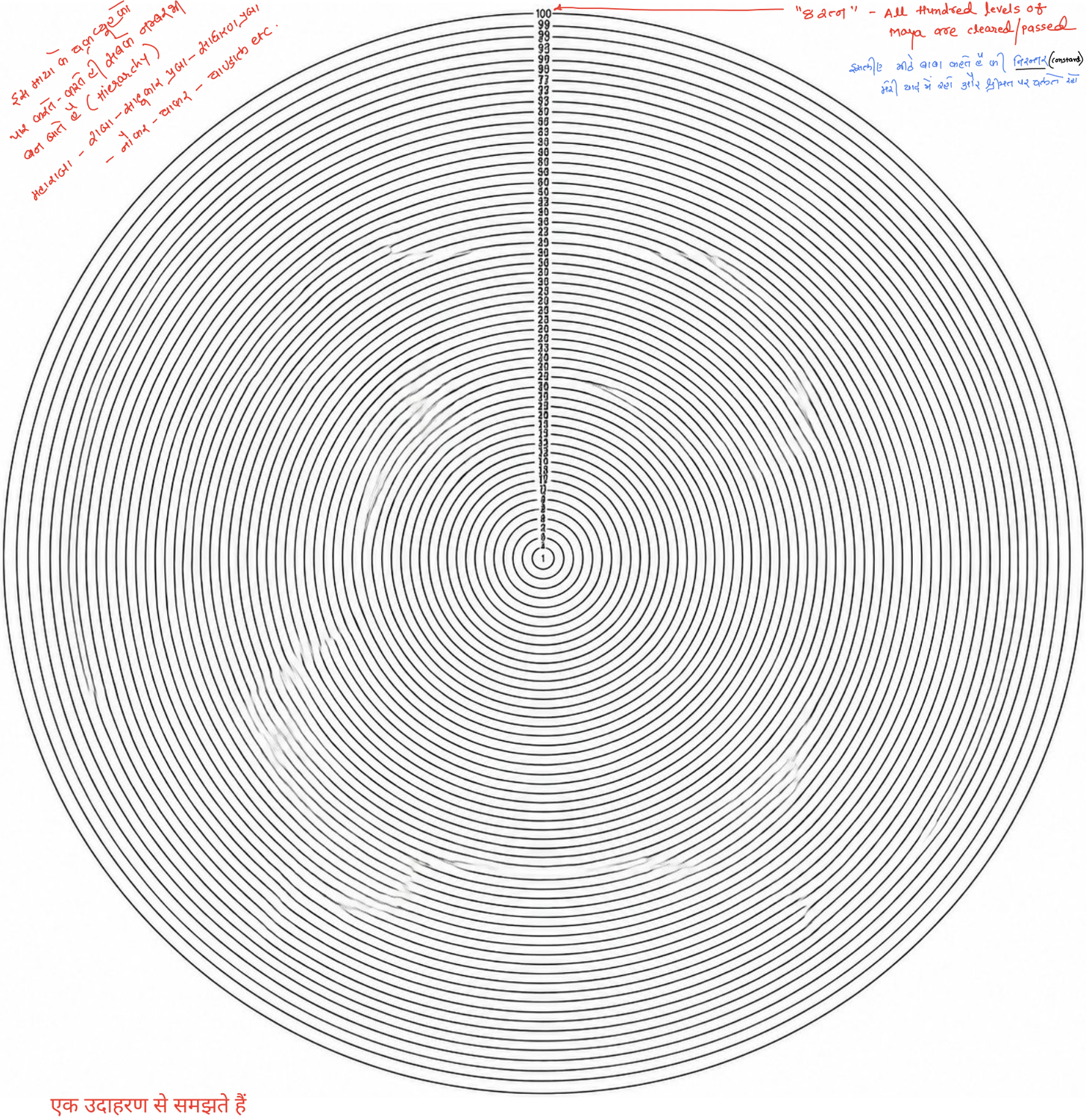
इस कहानी में जो बताया है की ईश्वर या परमात्मा ने सबको एक समान दिया - यह तो बिल्कुल सही है

परंतु ये सिर्फ एक ही पहलू पर बात हुई..
लेकिन इसमें जो सबसे बड़ी Missing Link है वह यह है की
जो सुबह से आए, जिन्होंने मेहनत किया(अर्थात शिव बाबा से श्रीमत लेकर उनके दिखाए गए मार्ग पर त्याग,तपस्या और पुरुषार्थ किया) और मुआवजा प्राप्त किया वह चारों युगों में हमेशा के लिए आगे रहते हैं (golden spoon in mouth) क्योंकि उन्होंने बाबा की मदद से पुरुषार्थ/मेहनत से माया पर जीत पा कर उस मुआवजे को अर्जित किया है न कि मार या रहम से..

और जो पीछे से आए हैं(अर्थात इस संगम युग पर जिन्होंको बाबा एवं बाबा की श्रीमत नहीं मिली है - जिसे मीठे बाबा मुक्ति का वर्सा कहते है) उन्होंने माया को जीता नहीं है सिर्फ इतना ही नहीं उनको तो भगवान क्या और माया क्या है वो भी पता नहीं है तो उनको सजा के बल से(जिसे बाबा कहते है "मोचरा और मानी" - मार खाकर रोटी को पाना) इक्वल मुआवजा मिलेगा

दूसरे शब्दों में, इस संगम पर पूरे कल्प के लिए श्रृष्टि की hierarchy बनती है कि कौन राजा बनेगा और कौन प्रजा..

एक और अति सूक्ष्म बात यहां रख रहे हैं इसको सिर्फ हम बाबा की याद से ही समझ सकते हैं
वह यह है की, अंत में एक्चुअल में बाबा धर्मराज के द्वारा सजा नहीं देते अपितु बाबा उस समय भी रहम दिल होके आत्मा को ऊर्जा देते हैं माया के बाकी रहे हुए चक्रव्यूह से निकलने के लिए
जिस आत्मा ने चक्रव्यूह को पार नहीं किया वह आत्मा जब धर्मराज की ऊर्जा से चक्रव्यूह से बाहर निकलती है तो उसे अति कष्ट या पीड़ा अनुभव होती है जिसको ही लोगों ने कह दिया है कि धर्मराज ने सजा दी..
परंतु वास्तव में वह सजा नहीं है, वह तो रहम ही है
पीड़ा तो इसलिए होती है क्योंकि उस आत्मा ने (बाबा की श्रीमत अनुसार) अपने पुरुषार्थ के बल से उस चक्रव्यूह को पार नहीं किया।



एक उदाहरण से समझते हैं

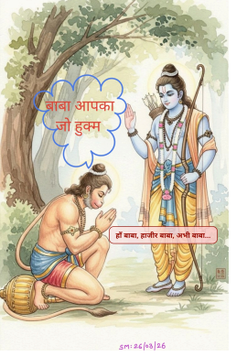
सिर्फ समझने के लिए यहां माया के चक्रव्यूह को 100 सर्कल के रूप में दिखाया हैं
जिसमें जो आत्मा इन 100 सर्कल को(बाबा की श्रीमत के आधार पर अपने पुरुषार्थ से) पार कर लेगी वह pass with honours होगी। जिसे बाबा अष्ट रत्न कहते हैं। जिन आत्माओं को धर्मराज भी झुक कर सलाम करेगा।

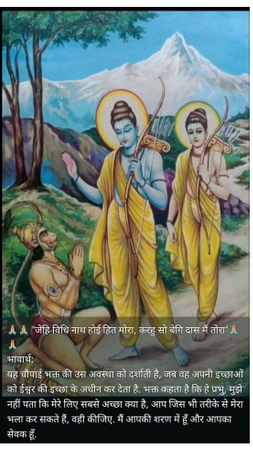
अब एक उदाहरण से समझो,
जो 108 की माला के बाकी के 100 है उन्होंने 99 चक्रव्यूह को पार किया और एक चक्रव्यूह रह गया तो....
उस एक चक्रव्यूह को पार करने के लिए धर्मराज उनको ऊर्जा देगा और उस ऊर्जा से वह एक चक्रव्यूह को पार करेंगे तो जो एक चक्रव्यूह को धर्मराज की ऊर्जा से उन्होंने पार किया (यह जो सीन होगा वह कुछ ऐसा होगा जैसे कि कोई उनको उस चक्रव्यूह से घसीट कर बाहर निकाल रहा हो) तो इस कारण से उनको उस समय अत्यंत पीड़ा अनुभव होगी जिसे बाबा ने मुरली में कहा है की बाकी के जो 100 है उनको भी कुछ सटके अवश्य पड़ेंगे क्योंकि उन्होंने वो 100वा चक्रव्यूह अपने पुरुषार्थ से नहीं किंतु धर्मराज की ऊर्जा/मदद से पार किया है और वह 100वा चक्रव्यूह उन आत्माओं के लिए कल्प कल्पांतर के लिए Unknown ही रह जाएगा इसीलिए बाबा कहते हैं कि अगर अभी पुरुषार्थ नहीं किया तो कल्प कल्पांतर के लिए प्राप्ति से वंचित हो जाएंगे।

इसी प्रकार सभी आत्माओ के लिए समझ सकते हैं
जैसे किसी ने 30 चक्रव्यूह पार किए हैं तो उनको 70 चक्रव्यूह को धर्मराज की ऊर्जा की मदद से पार करना होगा(यह जो सीन होगा वह कुछ ऐसा होगा जैसे कि कोई उनको उस 70 चक्रव्यूह से घसीट कर बाहर निकाल रहा हो) जो उन्हें सजा का अनुभव कराएंगे

फिर से दोहराते है, वास्तव में बाबा धर्मराज के द्वारा यह भी रहम ही कर रहे हैं परंतु जैसे आगे बताया वैसे इस किस्सेमें चक्रव्यूह को पार करते समय एक second में अनेक वर्षों की उन्हें पीड़ा का अनुभव होगा जिसको शास्त्रों में/गरुड़ पुराण में या और और सभी धर्मों के धर्म शास्त्रोंमें धर्मराज या उन धर्मों के अनुसार जो भी नाम दिया है उनकी सजा के रूप में वर्णित करेंगे द्वापर से...

माया को कैसे जाने...?




"जेहि विधि नाथ होई हित मोरा, करहु सो बेगि दास मैं तोरा"।
भावार्थ:
यह चौपाई भक्त की उस अवस्था को दर्शाती है, जब वह अपनी इच्छाओं को ईश्वर की इच्छा के अधीन कर देता है. भक्त कहता है कि हे प्रभु, मुझे नहीं पता कि मेरे लिए सबसे अच्छा क्या है, आप जिस भी तरीके से मेरा भला कर सकते हैं, वही कीजिए. मैं आपकी शरण में हूँ और आपका सेवक हूँ.

गीता के 7वें अध्याय के 14 श्लोक में यह संपूर्ण स्पष्ट रीति बताया है कि अगर त्रिगुणी माना सतो रजो तमो गुण से निर्मित माया को जानना है तो हमें परमात्मा अर्थात शिव बाबा की शरण में संपूर्ण समर्पण होकर चलना होगा - ये एकमात्र उपाय है

कोई भी मनुष्य आत्मा को अपना आधार नहीं बनाना है।

यह बात कुछ हद तक ठीक है कि जब तक हम ज्ञान में नये होते है तो हमें निश्चय इतना पक्का नहीं होता है तो सिर्फ तब तक हम किसी के क्लास सुने या किसी से ज्ञान योग के लिए कुछ हद तक मदद ले मन मत

लेकिन अगर हमें माया को संपूर्ण रीति जानना है एवं उसके सामने विजयी होना है तो हमारा आधार सिर्फ और सिर्फ शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा और मम्मा यह तीन ही होने चाहिए - इससे आगे कोई भी माना कोई भी नहीं

दूसरे किसी को भी क्यों फॉलो नहीं करना है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥ अध्याय - 7

दूसरे शब्दों में ...

मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है।
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥

हे भारत! तू सब प्रकारसे उस परमेश्वरकी ही शरणमें* जा। उस परमात्माकी कृपासे ही तू परम

* लज्जा, भय, मान, बड़ाई और आसक्तिको त्यागकर एवं शरीर और संसारमें अहंता, ममतासे रहित होकर केवल एक परमात्माको ही परम आश्रय, परमगति और सर्वस्व समझना तथा अनन्यभावसे अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमपूर्वक निरन्तर भगवान्‌के नाम, गुण, प्रभाव और स्वरूपका चिन्तन करते रहना एवं भगवान्‌का भजन, स्मरण रखते हुए ही उनके आज्ञानुसार कर्तव्यकर्मोंका निःस्वार्थभावसे केवल परमेश्वरके लिये आचरण करना यह 'सब प्रकारसे परमात्माके ही शरण' होना है।

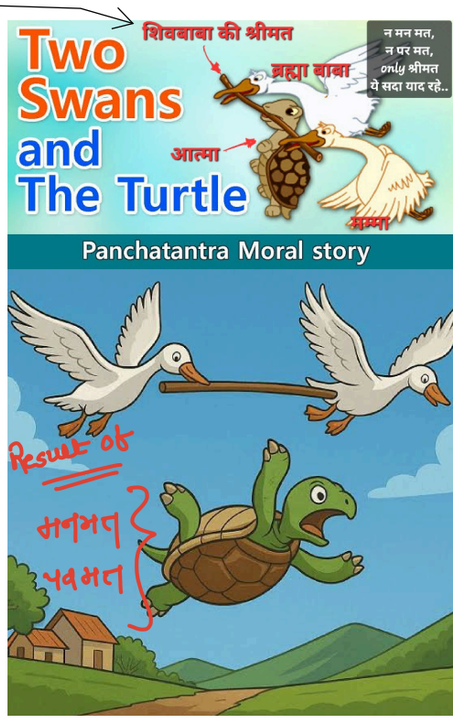
* अध्याय १८ * २३९

शान्तिको तथा सनातन परमधामको प्राप्त होगा॥ ६२॥

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

२४० * श्रीमद्भगवद्गीता *

सम्पूर्ण धर्मोंको अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मोंको मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार परमेश्वरकी ही शरणमें[१] आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर॥ ६६॥ The World Almighty's Guarantee



जो भी आत्माएं हमें माया के बारे में या किसी भी ज्ञान के राज की स्पष्टता के बारे में कुछ भी समझाएंगे उसमें कुछ ना कुछ तो त्रुटि रह ही जाएगी

अब इसमें हम दो उदाहरण लेते हैं

पहला उदाहरण:

मान लो कि एक ब्राह्मण आत्मा जिसको नाम मान शान की कोई भी इच्छा नहीं है उस को 97% या 99% मालूम पड़ चुका है की माया क्या है (100% क्यों नहीं? क्योंकि अभी कोई भी संपूर्ण नहीं बना है ब्रह्मा बाबा के सिवाय)

तो अब यह आत्मा आपको अपने सच्चे दिल से निस्वार्थ भाव से आपको जो कुछ भी समझाएगी वह ऐसा होगा जैसे की मान लो कोई 12वीं कक्षा का विद्यार्थी दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी को मैथमेटिक्स के 12 वीं कक्षा के Problems को समझाता हो जो कि उसने पहली कक्षा से लेकर 11वीं कक्षा तक को अपने बल बूते पर पार करके सब कुछ अर्जित करके अब 12वीं कक्षा में पहुंचा है(उसकी खुद की कमाई)
लेकिन वह दूसरी कक्षा का विद्यार्थी बेचारा उसको कैसे ग्रहण कर सकेगा क्योंकि उसकी बुद्धि वहां तक पहुंची ही नहीं है व पहुंच ही नहीं सकती

दूसरा कि वह जो अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा हमें समझा रही है उनकी अपूर्णता भी अर्थात उनमें जो कमी कमजोरीया है वो भी हमारे अंदर unconsciously transfer होकर घर करती जाती है - फिर उसको निकालने के लिए अलग से मेहनत करनी पड़ेगी और अब हमारे पास समय है कहां....?
साथ ही जब हम उस आत्मा से सुनते हैं तो उस आत्मा की याद ना चाहते हुए भी हमको आ ही जाती है। जबकि हमारा लक्ष्य यह है कि निरंतर शिव बाबा की ही याद रहे। निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
Constant/ without any break or interruption
और सबसे बड़ी बात
जरा सोचो कि दूसरों को (अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा) फॉलो करते-करते अगर यह शरीर छोड़ना पड़े तो अंत मति सो गति क्या होगी?
हमको ऐसा लगता है कि उसमें क्या है अंत में तो हम बाबा को याद करते ही शरीर छोड़ेंगे
लेकिन नहीं, "बहुत काल का अभ्यास ही अंत में काम में आयेगा एवं अंत में किसी भी देहधारी की याद ना हो सिवाय एक बाबा के" - भगवानुवाच

तो इसीलिए एक बार थोड़ा सा भी निश्चय हो जाने के बाद हमें मुरली को ही अपना आधार बनाना है

क्योंकि मुरली पढ़ते हैं तो वह मुरली है शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा का मन और उनके मन से ही तो यह संपूर्ण ब्रह्मांड/ माया क्रिएट हुई है एवं वह दोनों 100% है तो उनके द्वारा जो भी श्रीमत मिलेगी वह हमें 100% बनाएगी- रिंचक मात्र भी त्रुटि नहीं।

100 : 1 Advantage in All Aspects

इसीलिए जब हम मुरली पढ़ते हैं तो हमारा मन भी बापदादा के साथ ऑटोमेटेकली ही जुड़ जाता है जिससे कि उनकी याद स्वतः ही रहती है और याद के कारण हमारे विकर्म दग्ध होते है और इसी के चलते हमारी बुद्धि की जो ग्रहण शक्ति है वह बढ़ती है एवं धारणा भी स्वतः ही होती जाती है जिसके अंतिम फल स्वरूप माया को हम संपूर्ण रीति समझ जाते हैं

यह तो दुनिया में भी कहते हैं कि अगर किसी दुश्मन को जीतना है तो सबसे पहले उस दुश्मन की स्ट्रैंथ और वीकनेस - इसको जानना चाहिए अर्थात दुश्मन को जानना चाहिए अगर दुश्मन को जान लिया तो उसको हराना कोई बड़ी बात नहीं।

फिर पुजारी बनते हो। तो पहली बात है, बाप को याद करो। बाप को याद करने का अभ्यास करने से धारणा होगी। एक के साथ प्रीत नहीं है तो फिर और और के साथ लग जाती है। ऐसी-ऐसी

12/05/26 Most imp Subtle Psychology

और यह हमेशा याद रहे की जो हम खुद अपने बलबूते पर कमाते हैं वही साथ में रहता है इसीलिए मीठे बाबा कहते हैं कि अपनी घोट तो नशा चढ़े
किसी के द्वारा दिया गया कुछ भी Temporary खुशी तो देगा लेकिन वह अपनी कमाई नहीं है इसीलिए वह खुशी स्थाई नहीं रहेगी

दूसरा उदाहरण:

आजकल यह दूसरे उदाहरण वाली कैटेगरी की आत्माये ज्यादा देखने में आती हैं जिनको ज्ञान की सच्ची गहराई क्या है वो पता ही नहीं है लेकिन नाम मान शान के चक्कर में (मुझे सब पहचाने, मेरी महिमा करें आदि आदि...) कुछ भी ज्ञान देते रहते हैं जो कि हमें बाबा से दूर करते हैं

अब सोचो कि, उनसे वो अपूर्ण देह अभियान युक्त ज्ञान हमने लिया तो उसकी result एक तो समय हमारे पास already कम है वो अमूल्य समय व्यर्थ चला गया और दूसरा कि वह अधूरा ज्ञान हमको बाबा से/लक्ष्य से ओर ही दूर ले जाएगा और इतने में ही समय समाप्त हो गया तो...? (चाहे स्वयं का शरीर छूट जाए या विनाश हो जाए - किसी भी रीति से)

Point to ponder deeply...

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥ अध्याय- ७

दूसरे शब्दों में ...

मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है। Impossible
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

संपूर्णता की मंजिल तक कौन पहुंच नहीं सकता अर्थात किसको धर्मराज के सामने सर झुकाना पड़ेगा।

जो ब्राह्मण आत्माए भगवान के सामने तर्क देती है वह आत्माए कुभी भी संपूर्णता की मंजिल तक नहीं पहुंच सकती फिर चाहे उसको कल्प कल्पांतर का भी समय क्यों ना मिले। वास्तव में हमारे पास तो यह संगम युग का छोटा सा समय ही है उसमें भी 90 साल से भी ज्यादा समय तो बीत चुका है।



अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना



उनमें भी वह ब्राह्मण आत्माएं जो अपनी कमी कमजोरी के कारण, अपने देह अभिमान वा अहम कार के कारण बाबा जो श्रीमत जिस संदर्भ और जिस भाव से एकदम Crystal clear कर के दे रहे है उस श्रीमत को वैसे का वैसा फॉलो नहीं कर सकती है(माया का सामना करने में अक्षम है)तो वो क्या करती है..?

उस श्रीमत को फॉलो करने के बजाय भगवान को ही, उल्टा उनके सामने, उन्होंने किसी और मुरली में, किसी और संदर्भ से, जो श्रीमत कही है उस श्रीमत का छोटा सा टुकड़ा लेकर स्वयं भगवान/महाकाल को तर्क देकर उस crystal clear श्रीमत को कट करती हैं - अपनी होशियारी/बुद्धिमानी दिखाती है और महाकाल की श्रीमत को कट करती हैं।

अब सोचो, इन आत्माओं को क्या कहेंगे और इन आत्माओं की गति क्या होगी?